पंचम–अध्याय

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय–पंचम

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन का सच्चा आधार नैतिकता तथा सच्चरित्रता ही है। इस प्रकार शैक्षिक मूल्यों में सदाचार ही शिक्षक के सफलता की कुंजी है। अतः शिक्षक अपना उद्देश्य पाने में सक्षम होने के लिये विद्यार्थियों का शैक्षिक अध्ययन जरूरी है। तथा उसका मूल्यांकन करना अति आवश्यक है। शिक्षक छात्रों में एक ऐसी छाप छोड़ जाते हैं, जिसके लिये वह सदैव विद्यार्थियों द्वारा उचित गौरव एवं सम्मान पाता है। और कालान्तर में भी स्मरण किया जाता है। गुरूजनों व आचार्य की समर्थ प्रेरणा से ही बालकों और शिष्यों का पथ प्रशस्त हो सकता है। नैतिकता रूपी पौधा विश्वास रूपी भूमि एवं श्रद्धारूपी सिंचन की मांग करता है। आज भी अनेक शिक्षक हैं जो समाज में विश्वास एवं श्रद्धा के पात्र हैं। और शिक्षकीय गौरव एवं आदर्श से विद्यार्थियों को समाज को निरन्तर लाभान्वित कर रहे हैं।

किसी देश की गुणवत्ता वहाँ के नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर है नागरिकों की गुणवत्ता बहुत कुछ शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है। स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के योगदान का सीधा संबंध सुयोग्य नागरिकता तथा राष्ट्र के विकास से है। वस्तुतः उच्च प्राथमिक शिक्षक एवं जीवन्त आदर्श तथा ज्ञानधारा का असज स्त्रोत है। शिक्षक ही छात्रों के सर्वागीण विकास को सही दिशा प्रदान करता है अर्थात् उच्च प्राथमिक शिक्षक छात्र जीवन की विकास की नींव का पत्थर साबित होता है। नींव मजबूत होगी तो इमारत भी मजबूती से अपने स्थान पर अचल व अडिग खड़ी रहेगी।

उच्च प्राथमिक शिक्षक की शुरूआत छात्रों से सदगुणों का समावेश शिक्षा के द्वारा करता है। संक्षेप में शिक्षक मानवता का निर्माता व समाज का शिल्पी है। विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिये शिक्षकों का होना आवश्यक है। क्योंकि सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। यह तभी संभव होगा जब अध्यापकों में मूल्यों का विकास हो। मूल्य मनुष्य के अन्तरम में जाग्रत हुई शक्ति है। जो उसे एक विशिष्ट प्रकार से कर्म करने के लिये प्रेरित करती है और उसके आचरण को शांसित करती है। बच्चों के अंदर मूल्यों का सम्पूर्ण विकास हो यदि शैक्षिक मूल्यों का विकास हो जाये तो सभी मूल्यों को भी समझ सकते हैं।

अतः छात्रों में शैक्षिक स्तर को व उनके आदर्श मूल्यों के गिरते हुए स्तर को रोकने हेतु उच्च प्राथमिक शिक्षा के स्तर से ही परिवर्तन करना होगा। और इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उच्च प्राथमिक शिक्षक को ही निभानी है, इसलिये उच्च प्राथमिक शिक्षकों को अपनी शैक्षिक योग्यता को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखकर शिक्षा के सभी पक्ष व व्यवहारिकता सम्बन्धी ज्ञान छात्रों के समस्या का समाधान आदि का मार्ग प्रशस्त करना होगा। वो तभी अपने विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं, जब वो स्वयं शैक्षिक मूल्यों के प्रति उन्मुख हों।

5.2 समस्या कथन –

विभिन्न पृष्ठभूमि के उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

5.3 शोध कार्य के उद्देश्य –

- उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अनुमापन करना।

- उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
- विभिन्न पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.4 शोध कार्य की परिकल्पनाऐं –

Ho 1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 2. शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 3. 5 वर्ष व 5 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

उप–परिकल्पनाऐ :–

Ho 1.1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.2 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों की शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.3 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के शैक्षिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.4 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.5 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.6 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.7 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के व्यवहारिक क्षमता क में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.8 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.9 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवहारिक क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.10 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.11 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित योग्यता वाले शिक्षकों के शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.12 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की शिक्षण कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.13 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में शिक्षित शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.14 शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho 1.15 पाँच वर्ष व उससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

5.5 शोध में प्रयुक्त चर-

1. स्वतंत्र चर -प्रयोगकर्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रयोग में जिस पर उसका नियंत्रण रहता है; उसे स्वतंत्र चर कहते हैं।

- ❖ शैक्षिक योग्यता
- ❖ शैक्षिक अनुभव

2. आश्रित चर - स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तित होता है और जिसका अध्ययन तथा मापन किया जाता है, उसे आश्रित चर कहते हैं।

- ❖ शैक्षिक मूल्य

5.6 शोध का परिसीमन -

1. प्रस्तुत शोध भोपाल शहर के नरेला विधानसभा क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल नियमित शिक्षकों तक सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल वे शिक्षकों का चयन होगा जिनको कम से कम 5 वर्ष या उससे अधिक का अनुभव है।

5.7 न्यादर्श एवं उसका चयन -

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। जिसके लिये म.प्र. राज्य के भोपाल शहर के नरेला विधान सभा क्षेत्र के शासकीय उच्च प्राथमिक स्कूल में कार्यरत 100 शिक्षकों में से 60 शिक्षकों का चयन किया गया। शिक्षकों की प्रारम्भिक शिक्षा (ग्रामीण/शहरी) व शैक्षिक योग्यता स्नातक/परास्नातक एवं शैक्षिक अनुभव 5

वर्ष का या 5 वर्ष से अधिक के आधार पर उनके शैक्षिक मूल्यों को जानने के लिये उनका चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

5.8 शोध उपकरण –

शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करने के लिये शोधकर्ता ने स्वनिर्मित परिसूची का निर्माण किया जिसमें 40 कथन है जिनके उत्तर के चार विकल्प है। एस.पी अहलूवालिया व एस.पी.कुलश्रेष्ठ की शिक्ष कमूल परिसूची से ली गई है। शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों को जानने के लिये पॉच घटकों का प्रयोग किया है (1). शैक्षिक प्रतिबद्धता (2). शिक्षण क्षमता (3). शिक्षण कौशल (4). व्यवहारिक सक्षमता (5). समस्या समाधान इन सभी घटकों का मुख्य उद्देश्य है शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य जानना। प्रत्येक घटक में 8 प्रश्न लिये गये है।

5.9 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु संग्रहित प्रदत्तों को संगठित तथा वर्गीकृत करने के पश्चात् दो समूहों की तुलना करने के लिये 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया।

5.10 प्रदत्तों का विश्लेषण –

परिकल्पना क्रमांक	तालिका क्रमांक	प्रयुक्त सांख्यिकी	प्राप्त परिणाम	निष्कर्ष
Ho 1.	4.1	t मान	0.630	सार्थक नहीं है
Ho 2.	4.2	t मान	6.370	सार्थक है।
Ho 3.	4.3	t मान	0.242	सार्थक नहीं है
Ho 1.1	4.4	t मान	0.562	सार्थक नहीं है
Ho 1.2	4.5	t मान	2.081	सार्थक है।

Ho 1.3	4.6	t मान	1.056	सार्थक नहीं है
Ho 1.4	4.7	t मान	0.481	सार्थक नहीं है
Ho 1.5	4.8	t मान	0.711	सार्थक नहीं है
Ho 1.6	4.9	t मान	1.135	सार्थक नहीं है
Ho 1.7	4.10	t मान	0.840	सार्थक नहीं है
Ho 1.8	4.11	t मान	0.661	सार्थक नहीं है
Ho 1.9	4.12	t मान	0.507	सार्थक नहीं है
Ho 1.10	4.13	t मान	0.117	सार्थक नहीं है
Ho 1.11	4.14	t मान	0.561	सार्थक नहीं है
Ho 1.12	4.15	t मान	0.508	सार्थक नहीं है
Ho 1.13	4.16	t मान	0.349	सार्थक नहीं है
Ho 1.14	4.17	t मान	0.570	सार्थक नहीं है
Ho 1.15	4.18	t मान	1.514	सार्थक नहीं है

5.11 शोध परिणाम –

शोधकर्ता द्वारा ऑकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात निम्न परिणाम प्राप्त हुये

1. प्रारम्भिक शिक्षा (ग्रामीण/शहरी) क्षेत्र में प्राप्त करने वाले उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।
2. स्नातक एवं परस्नातक शिक्षा प्राप्त करने वाले उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।
3. अध्यापन अनुभव 5 वर्ष व उससे अधिक वाले उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्षः

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणामों एवं उनकी विवेचना के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

1. उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन संबंधी परिवेश का उनके शैक्षिक मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं होता है। अर्थात् शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य उनकी शिक्षा प्राप्त करने के स्थान से स्वतंत्र होते है।
2. शिक्षकों का व्यवसायिक प्रशिक्षण शिक्षकों में शिक्षा संबंधी विभिन्न लक्षणों का निर्माण करने में सहायक होता है। उपरोक्त तथ्य प्रस्तुत अध्ययन प्राप्त परिणाम शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित को स्थापित करते पाये गये, जहाँ उच्च प्राथमिक स्तर के वे शिक्षक जिन्होंने व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया था उनमें अधिक शैक्षिक मूल्य पाये गये। जबकि प्रशिक्षण रहित शिक्षकों में उच्च प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अभाव था।
3. शिक्षकों के अनुभव के आधार पर वे शिक्षक जिनको पांच वर्ष का शैक्षिक अनुभव था उनमें शैक्षिक मूल्यों के प्रति कम जानकारी थी उसकी अपेक्षा पाँच वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव वाले शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूकता थी। अतः इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षकों में शैक्षिक अनुभव का महत्व अवश्य ही होता है। जब कोई कार्य का अनुभव अधिक हो जाता है तो शिक्षा से संबंधित उनमें जागरूकता देखने को मिलती है। **राघवेन्द्र (1964)** ने सामाजिक रूप से वंचित व अवंचित छात्रों में मूल्य प्राथमिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया **आनंद (1980)** ने शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों व कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया है। **मिस्त्री (1988)** ने ग्रामीण, शहरी और निजी गुजराती कॉलेज और माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इन सभी संबंधित शोध में शिक्षकों की

योग्यता अनुभव व परिवेश के आधार पर शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन है। उस अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि शिक्षकों में अनुभव, योग्यता एवं परिवेश का शैक्षिक मूल्यों में फर्क पड़ता है।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव –

प्रस्तुत शोधकार्य के अनुसार भावी शोधकार्य हेतु कुछ समस्याऐं निम्न प्रकार की हो सकती है

- ❖ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- ❖ शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- ❖ उच्च प्राथमिक सतर के अध्यापकों को अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन।
- ❖ शहरी, ग्रामीण एवं आदिवासी विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।
- ❖ उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अध्यापन, प्रभावशीलता व शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन।
- ❖ प्राथमिक स्तर के छात्रों में शैक्षिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- ❖ छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि का उनके मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन।
- ❖ जिला शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) जैसी संस्थाओं के शिक्षकों में मूल्यपरक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन।